कीटों का बाह्य कंकाल कब बना था?

कीटों की एक विशेषता होती है। इनमें कंकाल शरीर को चारों ओर से घेरे होता है। इसकी तुलना हमारे अपने कंकाल से की जा सकती है, जो शरीर के अंदर होता है। ऐसा माना जाता है कि यह कंकाल कीटों को कई शिकारियों का भोजन बनने से बचाता है। यही कारण है कि बाह्य कंकाल के विकास के बाद कीटों और उनसे सम्बंधित जीवों की तादाद में ज़बर्दस्त उछाल आया था और आज भी प्रजातियों की संख्या के लिहाज़ से ये प्राणी, जिन्हें संधिपाद या आर्थ्रोपोड कहते हैं, दुनिया में सर्वाधिक पाए जाते हैं। इनकी दस लाख से अधिक प्रजातियां पहचानी जा चुकी हैं।

डियानिया कैक्टीफॉर्मिस

मगर यह बाह्य कंकाल अस्तित्व में कब आया। हमें जो जीवाश्म मिलते हैं, उनके आधार पर अनुमान लगाया गया है कि संभवतः बाह्य कंकाल लगभग 54 करोड़ वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया था। माना जाता है कि सर्वप्रथम बाह्य कंकाल युक्त प्राणियों का विकास लोबोपोड नामक जंतु समूह से हुआ था। लोबोपोड यानी टांग वाले कृमि। ये दिखते तो संधिपाद जंतुओं जैसे हैं मगर इनमें बाह्य कंकाल नहीं होता। मगर आज तक इनके बीच की अवस्था नहीं मिली थी।

अब चीन में चेंगजियांग में एक जीवाश्म मिला है जो यह कड़ी उपलब्ध कराता है। *डियानिया कैक्टीफॉर्मिस* नामक यह कृमि कैक्टस जैसा दिखता है। इस कृमि की टांगें हैं और उन टांगों पर बाह्य कंकाल नज़र आता है। इससे पता चलता है कि संधिपाद जंतुओं में बाह्य कंकाल का विकास सबसे पहले टांगों पर हुआ था और फिर इसने पूरे शरीर को घेर लिया। वैसे जिनेटिक अध्ययनों का निष्कर्ष इससे उल्टा था। जीवाश्म रिकॉर्ड का महत्त्व यही है कि उसकी मदद से हम अपने वर्तमान अध्ययनों के आधार पर निर्मित धारणाओं की पुष्टि कर सकते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***